BISHOP SCOTT BOYS' SCHOOL
(Affiliated to CBSE, New Delhi) Affiliation No.: 330726, School Campus: Chainpur, Jaganpura,
By-Pass, Patna 804453.
Phone Number: 7061717782, 9798903550. ,
Web: www.bishopscottboysschool.com Email: info@bishopscottboysschool.com

Sarvada
Sarva shreshth
HOLISTIC DEVELOPMENT

STUDY COURSE MATERIAL

HINDI

SESSION-2020-21

CLASS-X

TOPIC: सूर दास के पद

DAY-1

❖ **TEACHING MATERIAL**

कवि परिचय और कठिन शब्दों के अर्थ

- हिंदी साहित्य का सूर्य कहे जाने वाले सूरदास का जन्म सन 1478 में रुनकता या रेणुका क्षेत्र में हुआ परंतु कुछ विद्वान उन्हें दिल्ली के पास सीही नामक गांव का मानते हैं|

- सुर जन्मांध थे या बाद में अंधे हो गए थे इस बारे में विद्वानों में मतभेद है| उनके पदों में यमुना का किनारा कदंब का पेड़ और रंगों का वर्णन उन्होंने जैसा किया है उसे देख कर उन्हें जन्मांध नहीं कहा जा सकता|

- सूरसागर साहित्य लहरी और सूर सारावली प्रामाणिक रचनाएं हैं|

- ब्रज भाषा में लिखे गए उनके पदों में अद्भुत मिठास मधुरता और कोमलता है|

कठिन शब्दों के अर्थ

1. अपरस- अछूता, अलिप्त

2. पुर इनि पात - कमल का पत्ता

3. परागी- मुग्ध हुई

4. बिथा- व्यथा

5. मर जादा - प्रतिष्ठा

6. हारिल- एक पक्षी जो सदैव अपने पंजों में एक लकड़ी थामे रहता है

7. व्याधि- रोग

8. मधुकर- भ्रमर

9. अनीति - अन्याय

10. डोलत धाय - दौड़ते फिरते हैं|

DAY-2

❖ **TEACHING MATERIAL**

ब्रज भाषा में लिखी गई भक्ति काव्य धारा के प्रसिद्ध कवि सूरदास द्वारा रचित सूरसागर से लिए गए प्रस्तुत चारों पदों में कृष्ण और गोपियों के प्रेम को प्रस्तुत किया गया है|

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूंद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाऊँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

1

प्रथम पद का सारांश

- प्रथम पद में गोपियां उद्धव से कहती है कि तुम बड़े सौभाग्यशाली हो जो प्रेम के चक्कर में नहीं पड़े| तुमने कभी कृष्ण के प्रेम का स्वाद नहीं चखा| यह तो हम ही मूर्ख है कि जो उसके प्रेम में ऐसे लिपट गई है जैसे गुड से चींटी लिपट जाती है यह व्यंग्य का भाव समेटे हुए हैं |

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुती गुहारि जितहिं तैं, उत तें धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।।

2

द्वितीय पद का सारांश

- दूसरे पद में विरह से व्यथित गोपियां कृष्ण को निष्ठुर कहती हुई उद्धव से कहती है कि हमारे मन की आस की आस मन में रह गई है जिस कृष्ण के आने की प्रतीक्षा में हमारी सांसे अटकी हुई थी | वहीं से योग साधना का संदेश सुनकर हम बहुत निराश हो गई हैं हमसे श्री कृष्ण के वियोग में धैर्य नहीं रखा जा रहा है |

DAY-3

❖ TEACHING MATERIAL

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौ लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।

3

तीसरे पद का सारांश

- तीसरे पद में गोपियां उद्धव की योग साधना को कड़वी ककड़ी बताकर कृष्ण के प्रति अपने प्रेम मैं दृढ़ विश्वास प्रकट करती है जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पंजों में एक लकड़ी को दिन-रात पकड़े रहता है वही स्थिति गोपियों की है गोपियों का कहना है कि योग मार्ग तो उन्हीं के लिए ठीक है जिसके मन में कृष्ण के प्रति प्रेम नहीं होता|

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै ‘सूर’, जो प्रजा न जाहिं सताए|

4

चौथे पद का सारांश

- चौथे पद में गोपियां व्यंग करती हुई कहती है कि लगता है कि कृष्ण हमसे राजनीति खेल रहे हैं चतुर तो पहले भी थे अब राजनीति के दांव पेच भी सीख गए हैं वह हमें योग मार्ग अपनाने की बात कहकर हम पर अन्याय कर रहे हैं कृष्ण का यह व्यवहार राज धर्म के विपरीत है|

DAY-4

❖ TEACHING MATERIAL

1. प्रश्न - उद्धव के व्यवहार की तुलना किस किससे की गई है

उत्तर - उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित से की गई है
क. कमल के पत्तों से जो जल में रहकर भी प्रभावित नहीं होते
ख. जल में पड़ी तेल की बूंद से जो जेल में मिलने के बाद भी घुलती मिलती नहीं|

2. प्रश्न - कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है |

उत्तर - कृष्ण के प्रति अपने प्रेम को गोपियों ने निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया है
क. वे स्वयं को कृष्ण रूपी गुड पर लिपटी हुई चींटी कहती हैं
ख. वे स्वयं को हारिल पक्षी के समान करती हैं जिसने कृष्ण प्रेम रूपी लकड़ी को दृढ़ता से थामा हुआ है
ग. वे मन वचन और कर्म से कृष्ण को मन में धारण किए हुए हैं|

3. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए|

उत्तर - गोपियों के अनुसार राजा का धर्म यह होना चाहिए कि वह प्रजा को अन्याय से बचाए उन्हें सताए जाने से रोके यही राजा का धर्म होता है|